Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-5, Issue-5, Continuous Issue-35, January - February 2026

मेहरुन्निसा परवेज़ की रचनाओं में आदिवासी महिला की समस्याएँ

-डॉ. फाल्गुनीबेन भीखुभाई प्रजापति

सारांश:

जब तथाकथित आधुनिक एवं सभ्य समाज में ही नारी की स्थिति कुछ संतोषजनक नहीं जान पड़ती, तो एक पिछड़े हुए आदिवासी समाज में इसके बेहतर होने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है। बल्कि वहाँ तो उसकी स्थिति और भी विकट दिखाई देती है। आदिवासी समाज में नारी को कुछ अलग प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही, उसे कोई सहारा भी नहीं मिलता ताकि वह इन चुनौतियों से निपट सके। ऐसे में इन्हें सहन करने के अतिरिक्त उसके पास कोई और चारा नहीं बचता। कथाकार मेहरुन्निसा परवेज़ का आदिवासी समाज से किसी-न-किसी तरह संपर्क रहा है। इसलिए इन्होंने इस समाज के जीवन को बहुत करीब से देखा और जाना है। विशेष रूप से इन्होंने वहाँ की महिलाओं की समस्याओं का बड़े गौर से अध्ययन किया है और फिर अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्हें स्वर भी प्रदान किया है।

शब्द कुंजी: त्रासदी, समस्या, रीति-रिवाज

प्रस्तावना:

आचार्य महावीर प्रसाद 'द्विवेदी' के शब्दों में 'साहित्य समाज का दर्पण है।' समाज की विविधता को हम साहित्य के माध्यम से पूरी सहृदयता के साथ बारीकी से देख सकते हैं। साहित्यकार अपने आसपास के समाज को अपनी रचनाओं में बड़ी ही संजीदगी के साथ अभिव्यक्त करता है। प्रसिद्ध महिला कथाकार पद्मश्री मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा-साहित्य को पढ़ते हुए, उनकी संवेदनशीलता और बारीकी को बखूबी देखा जा सकता है। उनके कथा-साहित्य पर तत्कालीन परिस्थिति एवं परिवेश की गहरी छाप देखने को मिलती है। लेखिका ने समाज को घूम-घूम कर अपनी आँखों से देखा है और मंथन किया है तब कहीं अपनी लेखनी को चलाया है, इसलिए इनकी कथा में कल्पना

की अपेक्षा यथार्थ बहुत ज्यादा देखने को मिलता है। इनके सभी पात्र जीवंत मालूम होते हैं क्योंकि किसी भी पात्र को उसके समाज से ही उठाया है।

पद्मश्री मेहरुन्निसा परवेज जी ने अपने कथा-साहित्य में प्रमुख रूप से आधुनिक संस्कृति से वंचित आदिवासी जीवन और निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की महिलाओं की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है। लेखिका ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास, जादू-टोना एवं स्त्री-शोषण की समस्या को अपनी लेखनी से सिर्फ चित्रित ही नहीं किया है बल्कि समाज में चेतना जागृत कर सुधारने की भी कोशिश की है।

मध्यप्रदेश के रतलाम, मंदसोर आदि क्षेत्रों में एक बाँछड़ा नामक समुदाय बसता है जो कि अपने पिछडेपन के कारण जाना जाता है। इस समुदाय के अपने कुछ रीति-रिवाज तथा परम्पराएँ हैं, जिनमें यहाँ के लोगों की गहरी आस्था है। इनको मानने में ही यह है लोग अपना हित समझते हैं। यदि इस समुदाय की स्त्री के जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो पता चलता है कि वह पुरुष की मर्जी के आगे कठपुतली की भाँति नृत्य करती है। उसकी अपनी इच्छा/अनिच्छा व चाहत को कोई महत्व नहीं दिया जाता। पुरुष जैसा चाहे उसे वैसा ही करना पड़ता है। यदि कोई स्त्री विरोध करने का प्रयास भी करती है तो उसे और अधिक यातना तथा कष्ट दिए जाते हैं। 'ओढना' कहानी में लेखिका ने आदिवासी महिला की इसी प्रकार की स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।

बाँछड़ा जाति में सदियों से चली आ रही परम्परा के अनुसार परिवार की एक लड़की को धंधे पर बैठाया जाता है। उसके नाम का निर्णय माता-पिता लेते हैं और देवी माँ के सामने इसकी शपथ ली जाती है। इसमें लड़की की इच्छा व अनिच्छा जानने का प्रश्न ही नहीं उठता। इस कार्य की शुरुआत एक उत्सव की भाँति की जाती है। तरह-तरह की तैयारियाँ और सामूहिक भोजन आदि का भी प्रबन्ध किया जाता है। अब जो लड़की धंधे पर बैठती है, उसे देवी माँ की तरह सबका कल्याण करने वाली तथा सबको पालने वाली माना जाता है, क्योंकि उसकी कमाई पर ही सब लोग जिंदा रहते हैं। 'ओढ़ना' कहानी में माता-पिता अपनी बड़ी लड़की रानी को इस कार्य के लिए नामजद करते हैं। किन्तु रानी की इच्छा भिन्न है। वह गृहस्थी करना चाहती है, घर बसाना चाहती है, दुल्हन बनना चाहती है। उसके द्वारा काफी विरोध किए जाने पर भी उसे जबरन धंधे पर बैठाने की पूरी तैयारी की जाती है। उस पर कई तरह से दबाव डाला जाता है। जब वह साफ इनकार करती है तो एक बुजुर्ग महिला उसे समझाने का प्रयास करती है - "मैं भी तो पहले दिन तेरी तरह ही रोई थी, पर यह तो करना ही होता है! यह तो हमारी बाँछड़ा जाति की आन है, शान है। यह तो पुरखों से, पीढ़ियों से हमारी बाँछड़ा जाति में होता ही आया है। बाबा ने देवी के आगे तेरा नाम लिया है, क्या अब अपनी जबान झूठी कर लें? उन्हें मौत नहीं आ जाएगी? बाप का मरा हुआ मुँह देखना चाहती है

री?"[1] इस प्रकार तमाम विरोध तथा दबाव के बावजूद रानी को जबर्दस्ती धंधे पर बैठा दिया जाता है।

इसके उपरांत लड़की के दिल पर क्या गुजरती है, यह और भी पीड़ादायक होता है। मुहूर्तवाले दिन की कुंडी खोलने की भी अपनी अलग परम्परा है। गाँव की सबसे बूढ़ी धंधेवाली संतो बुआ के आशीर्वाद से ही सबके घरों की कुंडी खोली जाती है। ज्यों ही संतो बुआ ने कुंडी गिराई, भड़ से दरवाजा खुला और रानी जोर-जोर से रोती हुई उनसे लिपट गई, मानो उसका सर्वस्व लुट गया हो। उसका रोना बड़ा ही दर्दनाक था जो बड़े-से-बड़े पत्थर कलेजे को भी हिला सकता था। संतो बुआ ने उसे छाती से लगा लिया और जात परम्परा के आगे अपनी लाचारी की बात कहकर उसे तसल्ली देने का प्रयास किया। उनका कहना है कि जो होना था वो तो हो गया, अब रोने से कोई फायदा नहीं। भाग्य का लिखा कौन टाल सकता है। इस पर रानी पुनः बिलख उठती है और बच्चे की तरह उनसे लिपट जाती है। सुबह नहाने के लिए जाते समय वह अपने मन की टीस अनारो बुआ के सामने भी व्यक्त करती है। अपने सारे सपने अधूरे रह जाने की बात कहती है, परंतु सबके हाथ बंधे हुए होते हैं, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। नारी जीवन की इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है!

धंधेवाली लड़की को किसी से प्रीत करने की अनुमति नहीं होती। पर नहाने के बाद लौटते समय मंदिर में रानी की मुलाकात भैरव से होती है। पहली ही नजर में दोनों एक-दूसरे के हो जाते हैं और फिर नवरात्रि के मेले के अवसर पर होने वाली मुलाकातों में तो वे जीवन भर का साथ निभाने का करार कर लेते हैं। इसी बीच एक और समस्या उत्पन्न होती है। रानी का पहला ग्राहक चेतन उसे किसी भी कीमत पर अपने सिवाय किसी और के लिए बैठने नहीं देना चाहता। लेकिन यह बात जाति परम्परा के विरुद्ध है। बूढ़े बाबा इस पर आपत्ति जताते हुए कहते हैं- अरे, यह तो बाँछड़ा जाति के खिलाफ बात है, ये सब होने लगा है, बाँछड़ा लड़की का फिर धंधे पर बैठने का मतलब क्या हुआ? यह गृहस्थिनों के चोंचले करने लगी, तो धंधे का मतलब क्या हुआ? हर धंधे के अपने कायदे होते हैं। दुकान में सब उधार खाने वाले हो गए तो दुकान खोलने में क्या फायदा? कोने-कोने में साँप-बिच्छू घात लगाये बैठे हों, तो आदमी आखिर जाये तो भी कहाँ जाये। यही स्थिति अब रानी की भी है, वह चारों ओर से घिर-सी जाती है।

अब रानी की स्थिति काफी विचित्र हो जाती है। हर कोई अपना-अपना स्वार्थ देखता है, उसकी किसी को परवाह नहीं। भैया पैसों के लालच में कुछ भी करने को तैयार हैं। वे अपनी छोटी बहन सारा को भी धंधे पर बैठा देने की बात करते हैं, जबकि उसकी उम्र मात्र ग्यारह साल की है। इस पर बाबू को गुस्सा आ जाता है और वे भैया की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं। फिर घर की औरतों

की सलाह ली जाती है, हालांकि उनकी सलाह कोई मायने नहीं रखती है। यहाँ रानी अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है, जिसके बदले उसे माँ की मार भी खानी पड़ती है। परन्तु वह साफ-साफ कह देती है- मैं चेतन के लिए या और किसी के लिए नहीं बैठूंगी, कहे देती हूँ।... मैं मर जाऊँगी, कुएं में कूद जाऊँगी ...तो, वह मुझे कहीं भी बैठा दें, मेरा सौदा कर दें, ये माँ-बाप हैं? अगर बौंछड़ा जाति में जन्म लेने का यही दंड है, तो मैं मर जाऊँगी। इस तरह मामला काफी गंभीर हो जाता है। हालांकि माँ गुस्से में आकर उसकी पिटाई तो कर देती हैं, पर बाद में उन्हें इसका दुःख होता है। फिर संतो बुआ आपबीती बताती है कि किस प्रकार उनके धंधे पर बैठने से इनकार करने और किसी से प्रेम करने की कड़ी सजा मिली थी तथा उनके प्रेमी की गाँववालों ने हत्या कर दी थी। अतः उसका भी इसी तरह का कदम अच्छा साबित नहीं होगा।

जब नारी खुला विरोध करने लगती है तो उसके विरुद्ध और कोई-न-कोई साजिश रच ली जाती है। रानी के साथ भी यही होता है। भैया और बाबू पाँच हजार रुपये में मामा के साथ उसका सौदा कर लेते हैं। रानी को इस बात का पता लगता है तो उसके तन-बदन में आग-सी लग जाती है। वह अपना रोष प्रकट करते हुए कहती है - "मैं कोई भैंस हूँ, जो जब जहाँ मर्जी आए बेच दी, कभी चेतन से पैसा खा लिया, अब मामा से पैसा ले रहे हैं और यही पाँच के दस मामा मुझसे कमाएगा।"[2] रानी की इस प्रकार की विद्रोही मानसिकता का आभास पाकर बाबू और मामा के मस्तिष्क में काफी खतरनाक विचार आते हैं। उनका सोचना है कि अपना ही साधा साँप जब फुफकारने लगे तो उसे मार देना चाहिए। इस तरह रानी एक साथ कई समस्याओं में उलझ जाती है। इससे ज्ञात होता है कि एक स्त्री पर स्वयं उसके परिजन किस प्रकार जुल्म ढाते हैं। किन्तु लेखिका ने रानी में साहस का संचार किया है ताकि वह इन चुनौतियों से निपट सके और अन्याय का विरोध कर सके। रानी घर से भागकर भैरव के पास पहुँच जाती है, जो कि अपने आप में बड़ी हिम्मत का काम कहा जाएगा।

स्त्री का स्वभाव भी बड़ा अजीब होता है। पति उसके साथ कैसा भी बर्ताव क्यों न करे, चाहे मार-पीट पर उतर आये, फिर भी वह उसी की ओर झुकती है। 'ओढ़ना' कहानी में ही भैया जब भाभी को चेतन के साथ बातें करते हुए देख लेते हैं और उसकी बुरी तरह पिटाई कर डालते हैं। उन्हें उसका किसी गैर मर्द के साथ हँसकर बात करना अच्छा नहीं लगता। शायद पुरुष की जात ही कुछ ऐसी है, वह स्वयं तो बाहर की औरत के साथ खूब हँस-हँसकर बातें कर सकता है, पर पत्नी को ऐसा करते नहीं देख सकता। भाभी की हालत पर रानी को तरस आता है और वह उसे भैया से सात दिन तक बात नहीं करने की सलाह देती है। पर भाभी का कहना है कि सात दिन तो क्या, वे सात घंटे नहीं रह सकते। इस पर रानी कहती है 'लो, आ गई न अपनी वाली पर, औरत की जात मार खाने

के लिए ही होती है, मरद कितना भी जुल्म करे, बदले में उसे रूठना भी नहीं आता, पति मार-मारकर प्राण ले लेगा और वह उसके लिए करवाचौथ का व्रत करेगी ।... अतः पुरुष के जुल्म सहकर भी नारी उसी की तरफदारी करती है। इसका एक बड़ा कारण यह जान पड़ता है कि पिछड़े आदिवासी समाज में नारी स्वावलंबी नहीं होती, इसलिए उसके पास कोई और विकल्प नहीं रहता। पुरुष इसका भरपूर लाभ उठाता है।

बाँछड़ा समुदाय में जो लड़की धंधे पर बैठती है उसे खेलावड़ी कहा जाता है और उसका जीवन भी नारकीय होता है। उसकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं की जाती। 'खेलावड़ी' कहानी के माध्यम से लेखिका ने आदिवासी महिला की इस स्थिति को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। इस कहानी में लालमणि की सगाई शंकर के साथ होने ही वाली थी कि दोनों परिवारों में अचानक वैमनस्य पैदा हो गया। शंकर के पिता पच्चीस हजार रुपए की माँग रख देते हैं। लालमणि चोरी-छिपे जाकर शंकर से मिलती है तो वह भी पिता का भय बताकर अपने कदम वापिस खींच लेता है। इससे लालमणि को गहरा धक्का लगता है। इसके बाद उसके पिता को अफीम की तस्करी के मामले में फँसा दिया जाता है। उन्हें छुड़ाने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है तो लालमणि को मामा के हाथों बेच दिया जाता है। मामा उसे धंधे पर बैठा देते हैं और खूब कमाई करवाते हैं। इस प्रकार पिता को मुक्त कराने के चक्कर में बेटी की जिन्दगी बरबाद हो जाती है।

आदिवासी समाज में नारी को पुरुष के समान ही गृहस्थी का भार वहन करना पड़ता है। जब घर की छोटी-छोटी जरूरतें पूरी होने में भी कठिनाई आती है तो लोगों की नजरें उसके जिस्म पर आ टिकती हैं। 'पसेरी भर जवानी' कहानी की मोहनी के साथ ऐसा ही होता है। पति-पत्नी द्वारा जी-तोड़ परिश्रम करने के बावजूद भी गुजारा नहीं हो पाता। ऐसे में काकी उससे अपना शरीर बेच देने की बात कहती है। पहले तो इस पर उसे काफी गुस्सा आता है. फिर एक दिन वह स्वयं हारकर इस दिशा में चलने के लिए कदम बढ़ाती है, परन्तु ठीक समय पर पति द्वारा टोक दिए जाने पर वह रुक जाती है। 'जंगली हिरनी' कहानी में एक गोरा साहब मेगन को जंगल में अकेली पाकर उसके साथ अपनी हवस पूरी करता है, जिसका वह विरोध तक नहीं कर पाती। इसी के फलस्वरूप जन्मी लड़की लच्छो साहब की तरह ही सुन्दर होती है। जब लच्छो बड़ी होती है तो उसे आदिवासी लड़के पसंद नहीं आते। फिर दियारी त्योहार के अवसर पर उसकी मुलाकात एक शहरी युवक से होती है जो उसे जीवन-साथी बनाने का भरोसा दिलाता है। परन्तु शीघ्र ही वह अपने शहर लौट जाता है और इस प्रकार लच्छो के सारे सपने और अरमान चूर-चूर हो जाते हैं।

आदिवासी महिला को भी अपनी जिन्दगी के फैसले स्वयं लेने का अधिकार नहीं मिलता। परिवार तथा समाज द्वारा उस पर अनेक प्रतिबंध लगाये जाते हैं, जिनका उल्लंघन करने पर उसे कड़ी सजा

भुगतनी पड़ती है। 'कानीबाट' कहानी में लेखिका ने नारी की कुछ इसी तरह की समस्याओं को प्रगट किया है। इसमें दुलेसा नामक लड़की है जो जिलेन से प्यार करती है, पर इधर इधर माता-पिता ने रामू को उसके लिए घर जमाई रख लिया है। किन्तु वह रामू को पति के रूप में स्वीकार करने के लिए कतई तैयार नहीं। इसके लिए वह घरवालों का खूब विरोध करती है। इसी बीच घोटुल के अवसर पर जब उसकी जिलेन से भेंट होती है तो पता चलता है कि वह किसी और के साथ शादी कर रहा है। इससे उसे बहुत दुःख होता है, क्योंकि वह जिलेन को अपना शरीर तक सौंप चुकी है। माँ को इस बात की खबर लगती है तो वे काफी गाली-गलौच करती हैं। इसके बावजूद भी रामू उसके बच्चे को अपना नाम देने के लिए तैयार हो जाता है। दुलेसा को इसका बड़ा आश्चर्य होता है और फिर वह दौड़कर रामू की कोठरी में घुस जाती है।

इसी कहानी में एक और नारी है-जलयारी, जो इससे भी बुरी स्थिति को भोगती है। घरवाले उसका ब्याह अतकेर के साथ करना चाहते हैं जबकि उसे चाजेन पसंद है। सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप प्रेमी के साथ पहली बार भागी लड़की की खूब पिटाई की जाती है, दूसरी बार उसे आग द्वारा दागते हैं, तीसरी बार उसके पैर को गाड़ी के चक्के में फंसाकर बेहोश होने तक घुमाया जाता है और इसके बाद फिर भागने पर उसे उसके प्रेमी के पास पहुँचा दिया जाता है। जलयारी अपने प्रेम की पहली दो परीक्षा दे चुकी है और तीसरी की तैयारी में है। परन्तु वह अतकेर को किसी भी कीमत पर पति मानने के लिए तैयार नहीं, चाहे उसकी जान भी क्यों न चली जाये। जब दुलेसा उसे गाँववालों द्वारा दी जाने वाली यातनाओं के बारे में बताती है तो वह साफ कह देती है- "देने दे, मैं सह लूँगी, पर ब्याह नहीं करूँगी। क्या मैंने इन लोगों से कहा था कि मेरा महला छुटपन में कर दो? अतकेर के लिए मेरे मन में घृणा-ही-घृणा है, मैं उसे अपना आदमी कैसे स्वीकारूँगी?"[3] अतः पता चलता है कि अपने प्रेम की खातिर नारी को कितनी यातनाएँ सहनी पड़ती हैं।

आधुनिकता का प्रभाव आदिवासी समाज पर भी किसी-न-किसी रूप में अवश्य पड़ा है और विशेषतः नारी तो इससे अछूती बिलकुल भी नहीं रही। लेकिन इससे उसे सुख की जगह दुःख ही अधिक हाथ लगा। 'कोरजा' उपन्यास में लेखिका ने अमित और कम्मो के बीच के वार्तालाप द्वारा नारी की इस स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसके तहत सर्वप्रथम तो आदिवासी लड़कियों के पहनावे में आने वाले परिवर्तन की ओर संकेत किया है। अब इन्हें हथ-करघे की बनी मोटी-मोटी साड़ियों के स्थान पर नाइलोन की पतली साड़ियाँ पसंद आने लगी हैं। इससे शहरी बाबू इनके जिस्म की ओर आकर्षित होते हैं, जो इनके साथ प्रेम का नाटक रचाते हैं। चाहे ये लोग कुँवारे हों या शादीशुदा, सब इसमें शामिल हो जाते हैं। ये लड़कियाँ भी इन बाबुओं के रहन-सहन और प्यार करने के अंदाज से बहुत प्रभावित हो जाती हैं। जब बाबू लोग इन्हें धोखा देकर चले जाते हैं तो

इनको बहुत दुःख होता है। उनके साथ बिताये गये क्षणों को याद कर इन्हें खूब अफसोस भी होता है। इस बारे में पूछे जाने पर रैयती नामक एक लड़की कुछ इस प्रकार बताती है- "नहीं बाबू, उस बाबू के पास पैसा था, वह फुलपैंट पहनता था, टीप-टाप से रहता था और और प्यार करने का उसका अपना अलग ढंग था। सलीका था! सब याद आता है, मन उदास रहता है।"[4]

शहरी बाबू जब तक जी चाहा इन आदिवासी लड़कियों के साथ अपनी वासना तृप्त की और फिर अपना दामन छुड़ाकर नौ दो ग्यारह हो गये। जब किसी प्रकार का सरकारी दबाव डाला गया, तो झूठी शादी रचाकर कुछ दिन इन्हें अपने साथ भी रख लिया। परन्तु यह कुछ दिनों का सुख-चैन इनके लिए दुःख का कारण ही बनता है, क्योंकि आखिर आना तो इन्हें अपने उसी अभावग्रस्त वातावरण में ही था। इन चंद लमहों को याद करके इन्हें और भी अधिक पीड़ा होती है। इस प्रकार लेखिका ने आदिवासी महिला के जीवन से जुड़ी कुछ समस्याओं का अपनी रचनाओं के माध्यम से उल्लेख किया है।

संदर्भ सूची:

- महेरुनिस्सा परवेज़ - 'ओढ़ना' (सोने का बेसर), पृष्ठ - 64
- 'वही', पृष्ठ - 90
- महेरुनिस्सा परवेज़ - 'कानीबाट' (फाल्गुनी), पृ. 70
- महेरुनिस्सा परवेज़ - 'कोरजा' (उपन्यास), पृ - 107

डॉ. फाल्गुनीबेन भीखुभाई प्रजापति

सहायक अध्यापक

किसान भारती आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, मेवड़

चलभाष नंबर: ७०४६०९८८६२

ईमेल: prajapatif793@gmail.com